indiavidya.com

सारांशात्मक मूल्यांकन - I
नमूना उत्तर पुस्तिका

विषय : हिंदी **अंक : 80**

कक्षा : नवीं **समय : 3 घंटे**

I. अ) 1. बच्चे ओस की बूँद की तरह शुद्ध होते है।

2. बच्चे कल के नागरिक है।

3. आजकल प्रायः घर घर में 'टॉपर्स' और 'रैंकर्स' तैयार करने की कोशिश की जा रहीं है।

4. ईशान का मन पढ़ाई के बज़ाय कुत्तों, मछलियों और पैंटिंग में लगता था।

5. नगर + ईक

आ) 1. राष्ट्रीय जन अपने मानसिक भावों को प्रकट करते हैं।

2. साहित्य कला नृत्य, गीत आमोद-प्रमोद के रूपों में प्रकट करते हैं।

3. आत्मा का विश्वव्यापी भाव आनंद है।

4. आत्म का विश्वव्यापी भाव विविध रूपों में साकार होता है।

5. ''निराकार''

इ) 1. अ) हंसना

2. आ) जीवन

3. इ) रोना

4. ई) पीडा

5. अ) चिंता क्रीडा

ई) 1. अ) हमेशा

2. अ) पुण्य

3. ई) प्रेम पूर्ण व्यवहार

4. अ) शुद्ध

5. आ) सदा + एव

indiavidya.com

indiavidya.com

II. अभिव्यक्ति सृजनात्मकता

अ) 1. मानव जीवन में सुख-दुख दोनों रहते हैं। मानव सुखमय जीवन ही बिताना चाहता है। हँसते रहने वाले का दिल स्वच्छ और शांत रहता है। हँसते बोलनेवाले के सभी मित्र बनते है। सबसे हँसते प्रेमपूर्वक बरताव करने से मानव सुखी बन सकता है। चाहे कितना भी कष्ट का सामना करना पडे दिल को तसल्ली पहुँचाने हँसते रहना और हँसते बोलना है। इससे मानसिक शांति मिलती है।

2. समुद्र के चंचल तरंग उठ-उठकर गिरती है वे कहना चाहती है कि तुम भी उनके जैसे अपने दिल में मीठी और कोमल आशाएँ भर लो। क्योंकि आशा को सफल बनाने के प्रयत्न जरूर करते हो। हर काम करने का उत्साह उमड़ता रहता है।

3. लोगों को विनियम के लिए वस्तुएँ बनायी व तैयार की जाती है। ऐसी वस्तुएँ कुछ प्रमाणिक तथ्यों और सिद्धांतों के आधार पर ही बनायी जाती है। एक जागरूक उपभोक्ता होने के नाते किसी चीज़ को खरीदते है तब हम उस चीज़ की प्रमाणिकता सिद्ध करनेवाले विषयों पर जरूर ध्यान देना चाहिए। उस वस्तु के बनाने ''इस्तेमाल किएगए पदार्थ उनकी माप-तोल उसके लाभ उपयोग वजन आदि से वस्तु की प्रामाणिकता का परिचय मिलता है। सरकार ने आई.एस.आई., अगमार्क आदि चिह्नवाले चीज़े ही खरीदने की सलाह देती है। सरकार जाँच-पडताल के बाद ही प्रामाणिक चिह्न अंकित करने की अनुमति देती है।

4. पृथ्वी और सूर्य आदि लोकों के बीच के स्थान को अंतरिक्ष के बारे में जानने की कोशिश में रहा है। इसी आशय की सिद्धि के लिए समय-समय पर अंतरिक्ष यान भेजे गये है। उन यों में अंतरिक्ष यात्री (एस्ट्रोनाट्स) जाते है। उनमें बज एलड्रिन, नील आर्मस्ट्रांग, राकेशशर्मा, यूरी गागरिन, कल्पना चावला सुनिता विलियम्स आदि प्रमुख है।

आ) नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर 5 या 6 पंक्तियों में लिखिए।

1. मेहमान का अर्थ है अतिथि। अतिथि देवो भव, अतिथि हमारे लिए गगवान की प्रतिमूर्ति के समान है। अतिथि का सत्कार भारतीय संप्रदाय का जन्मसिद्ध गुण है। ऐसे अतिथि की भलाई या अतिथि को खुश रखने अपनी हानिकी परवाह भी नहीं करते है। अतिथि सत्कार को ही परम धर्म मानकर जी जान से उसकी सेवा में जुड या निमग्न हो जाते हैं।

या

मानव जीवन में कोई भी काम असंभव नहीं है। मन लगाकर प्रयत्न करने से हर काम संभव होता है। मन में श्रद्धा रखकर काम की सफलता पर विश्वास रखते, भगवान पर भरोसा रखकर, संदेह या संशय छोड़कर एकाग्र चित्त होकर काम करते रहने से ज़रूर सफलता मिल सकती है। इस तरह हमें श्रद्धा, विश्वास, कडी मेहनत, शक्ति से युक्त प्रयत्नों से सफलता ज़रूर मिल सकती है।

2. युधिष्ठिर महान चिरत्रवान और रील संपन्न व्यक्ति था। धर्म परायण होने के कारण उसने यक्ष के कहने पर नकुल को जीवित करवाना चाहा। अगर उसकी जगह मै होता तो पराक्रमी साहसी, धनुर्विद्या प्रवीण अर्जुन को जीवित करवानाचाहता। क्योंकि

indiavidya.com

indiavidya.com

अर्जुन महान गुणोंवाला और तेज संपन्न था। अनेक देवों की कृपा से 92 और अस्त्र-शस्त्र प्राप्त किया हुआ महान व्यक्ति था। अपने पराक्रम से किसी भी तरह वह तीनों भाईयों को जीवित कर सकता है।

या

अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष केंद्र पर कदम रखने वाली पहली भारतीय महिला सुनीता विलियम्स हैं। वह अपने महान प्रयत्नों के फलस्वरूप सफल अंतरिक्षयाती बन सकी। श्रद्धा और लगन से उसने यह ख्याति प्राप्त की। भावी नागरिकों को यह संदेश देती है - सौभाग्य से मेरा जन्म भारत में हुआ है। मैं एक साधारण पढ़ी-लिखी नारी हूँ। सभी सुशिक्षित हो कर आगे बढ़ें और देश का नाम उज्जवाल व उन्नत करें।

3. श्री सोहनलाल द्विवेदी जी का जीवनकाल 1962-1988 है। उनकी अमूल्य रचनाएँ हिंदी साहित्य में प्रसिद्ध हुई है। उनकी प्रमुख रचना 'सेवाग्रम' है। भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से विभूषित किया।

या

कबीरदास जी हिंदी साहित्य के निर्गुण धारा के ज्ञान मार्गीय शाखा के प्रमुख कवि थे। इनका जन्म 1398 को हुआ और उनकी मृत्यु 1528 में हुई। कबीर पढ़े लिखे नहीं थे। स्वामी रामानंद इनके गुरु थे। कबीर की रचनाएँ 'बीजक' नामक ग्रंथ में संकलित है।

इ) ग्रामीण जीवन के सौंदर्य

रूपरेखा :- प्रस्तावना, ग्रामीण सौंदर्य, ग्रामीण जीवन, उपसंहार

प्रस्तावना :- कहा जाता है कि गाँव को ईश्वर ने बनाया है और नगर को मनुष्य ने बनाया है। 'ग्राम' का तद्भव रूप 'गाँव' है। ग्राम का अर्थ होता है। 'समूह' याने कुछ घर-बार, नर नगरी और पशु-पक्षियों का समूह। गाँव भारत की रीढ़ है।

ग्रामीण सौंदर्य : गाँव प्रकृति की गोद है। गाँव में साँप की चाल जैसी टेढ़ी-मेढ़ी गलियाँ, कच्चे पक्के, पर साफ भले किसान सीधी-सादी औरते, बच्चे पालतू पशु-मुर्गी आदि दृश्य मनमोहक होते है। गाँव का जीवन सरल व सात्विक होता है।

उपसंहार : गांधीजी केअनुसार ''गाँवों में ही सेवा और परिश्रम के अवतार किसान बसते है। भारत का हृदय गाँवों में बसता है। गाँवों की उन्नति से ही भारत की उन्नति हो सकती है''। अतः ग्राम का पुनरुद्धार कर ग्रामीण जीवन को स्वर्गतुल्य बनाना हमारा प्रथम कर्त्तव्य है।

या

फूलों से नित हँसना सीखो
भौरों से नित गाना
तरू की झुकी डालियों से सीखो
कोमल भाव बहाना

indiavidya.com

indiavidya.com

ई) तीन दिन की छुट्टी पत्र :-

दिनांक : 14
हैदराबाद।

सेवा में,

प्रधानाध्यापक जी,
दसवीं कक्षा,
नालंदाहाईस्कूल,
हैदराबाद।

महोदय,

मैं आपसे निवेदन करता हूँ कि मेरे बड़े भाई की शादी अगले सोमवार विजयवाड़ा में होनेवाली है। मुझे वहाँ जाना है और माँ बाप की सहायता करनी है। इसलिए शादी में सम्मिलित होने के कारण मैं विद्यालय आनेमें असमर्थ हूँ इसलिए मुझे 20.05.2014 से 23.05.2014 तक तीन दिन की छुट्टी देने की कृपा करें। आशा करता हूँ कि छुट्टी अवश्य मंजूर करेंगे।

सधन्यवाद

आपका आज्ञाकारी छात्र
x x x x

पता :-
प्रधानाध्यापक जी,
नालंदा हाईस्कूल
हैदराबाद

indiavidya.com

या

मित्र को पत्र

दिनांक : 14
हैदराबाद।

प्रिय मित्र,

मैं यहाँ कुशल हूँ। आशा करता हूँ कि तुम भी वहाँ कुशल हो। अगले हफ्ते से हमारी पोंगल की छुट्टियाँ शुरु हो जायेंगी। मैं इस पत्र के द्वारा मुख्य रूप से तुम्हें आमंत्रित कर रहा हूँ। हमारे यहाँ पोंगल का उत्सव बड़े धूम-धाम से मनाया जाता है। यहाँ विशेष मेला और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन होगा। यही नहीं हमारे देखने लायक अनेक स्थान है। इसलिए तुम जरूर आना।

तुम्हारे माता-पिता को मेरा प्रणाम। तुम्हारे आने की प्रतीक्षा करता हूँ।

आपका आज्ञाकारी छात्र
x x x x

पता :-

ए रामाराव, दसवीं कक्षा
नालंदा हाईस्कूल, हैदराबाद। हैदराबाद

indiavidya.com

indiavidya.com

III. व्याकरणांश

अ)

1. इ) अहिंसा
2. अ) कहानियाँ
3. आ) मान
4. ई) दुख - दुख
5. अ) गगन
6. आ) इक
7. ई) वयः + वृद्ध
8. अ) घनिष्ठ संबंध होना
9. आ) संज्ञा
10. अ) जन्म
11. आ) बूढ़ापा
12. इ) और
13. अ) के
14. आ) करती
15. अ) वाह!
16. इ) फुटबाल कैसा खेल है?
17. आ) से
18. आ) हम सब मेले में नहीं जायेंगें।
19. इ) उपासक
20. अ) मत

indiavidya.com